JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

भारतीय काव्यशास्त्र

रस निष्पत्ति

भारतीय काव्यशास्त्र में रस सिद्धांत प्राचीनतम माना जाता है ।इस के प्रणेता आचार्य भरतमुनि है ।उन्होंने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में रस सूत्र दिया,

" विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्ति:।"

भरतमुनि जी के रस सूत्र में आए ' संयोग '
और ' निष्पत्ति ' शब्द की व्याख्या जिन चार
आचार्यों ने की, उन्हें रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य
कहा जाता है।

इनके नाम है-- एक) भट्ट लोलट

दो) आचार्य शंकुक

3)भट्ट नायक

4)आचार्य अभिनव गुप्त।

आचार्य भट्ट लोल्लट --

(उत्पत्तिवाद या आरोपवाद)

संयोग का अर्थ - उत्पाद्य-उत्पादक संबंध/
गम्य- गमक संबंध/ पोष्य-पोषक संबंध
निष्पत्ति का अर्थ - उत्पत्ति
वे रस की स्थिति अनुकार्य अर्थात मूल पात्र में मानते हैं।

साहित्य और व्याकरण गुरु

Made with KINEMASTER

आचार्य शंकुक--

(अनुमितिवाद)

*चित्र तुरंग न्याय

*कला प्रतीति

संयोग का अर्थ- अनुमान

निष्पत्ति का अर्थ - अनुमिति

साहित्य और व्याकरण गुरु

Made with KINEMASTER

आचार्य शंकुक--

(अनुमितिवाद)

*चित्र तुरंग न्याय

*कला प्रतीति

संयोग का अर्थ- अनुमान

निष्पत्ति का अर्थ - अनुमिति

आचार्य भट्ट नायक --
(भुक्तिवाद)
* साधारणीकरण का सिद्धांत
संयोग का अर्थ -- भोज्य भोजक संबंध
निष्पत्ति का अर्थ है-- भुक्ति

आचार्य अभिनव गुप्त --

(अभिव्यक्ति वाद)

जल के छींटे देने से मिट्टी में व्याप्त गंध व्याप्त हो जाती है

उसी तरह से सहृदय में सदैव विद्यमान स्थाई भाव

विभावादि के सयोग से साधारणकृत होकर

अभिव्यक्त होने लगते हैं ।

निष्पत्ति का अर्थ -- अभिव्यक्ति

संयोग का अर्थ है -- व्यंग्य व्यंजक संबंध।

रससूत्र - विमर्श

भरतमुनि का रससूत्र → 'विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'

	सिद्धान्त	व्याख्याकार	'निष्पत्ति' का अर्थ
1→	उत्पत्तिवाद	भट्टलोल्लट	उत्पत्ति
2.	अनुमितिवाद	शंकुक	अनुमिति
3→	भुक्तिवाद	भट्टनायक	भुक्ति
4→	अभिव्यक्तिवाद	अभिनवगुप्त	अभिव्यक्ति

रससूत्र - विमर्श

भरतमुनि का रससूत्र- विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः

3 3

भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद

- स्थायीभाव + विभाव = उत्पाद्य-उत्पादकभाव सम्बन्ध

संयोग — जनित: होने पर रस की उत्पत्ति होती है

1

- स्थायीभाव + अनुभाव = गम्य-गमकभाव सम्बन्ध

संयोग — होने पर रस की प्रतीति होती है

2

- स्थायीभाव + व्यभिचारीभाव = पोष्य-पोषकभाव सम्बन्ध

संयोग — होने पर रस की पुष्टि होती है।

3

रससूत्र - विमर्श

भरतमुनि का रससूत्र- विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः

भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद

रस 1→ अनुकार्य - (राम-सीता आदि) - मुख्य रूप

2- अनुकर्ता - नट = गौण रूप

3→ सामाजिक - दर्शक = नहीं

उत्तर मीमांसा सिद्धान्त

शंकुक का अनुमितिवाद

चित्र

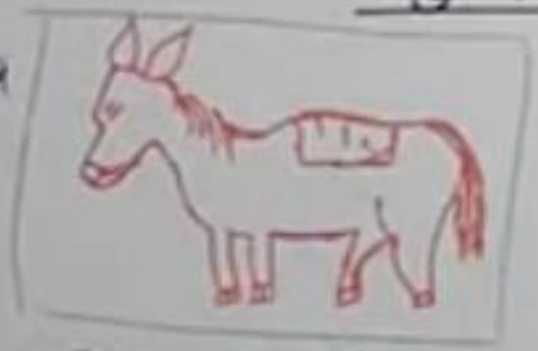

न्याय सिद्धान्त ✓

चित्रतुरग न्याय

1- यह घोड़ा ही है। - राम अनुकार्य ✗ - रस नहीं होता

यह राम ही है। नट अनुकर्ता

2- यह घोड़ा नहीं है। -

यह राम नहीं है।

3→ यह घोड़ा है या नहीं -

यह राम है या नहीं

4- यह घोड़ा के समान है -

यह राम के समान है।

भट्टनायक का भुक्तिवाद

सांख्यमतानुयायी

1- भट्टलोल्लट - × अनुकार्य अनुकर्ता

2 → शंकुक × अनुकर्ता

3 → अभिनवगुप्त × तटस्थ उदासीन

भट्टनायक का भुक्तिवाद

शब्द - अभिधा, लक्षणा

1- भावकत्व →

2- भोजकत्व

अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद

भट्टनायक - सामाजिक मे रसानुभूति

अभिनवगुप्त= सामाजिक मे रसानुभूति

निष्पत्ति — स्थायीभाव

अभिव्यक्त

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर